कथा सरिता

देना ही है पाना...

एक बार पँचास लोगों का ग्रुप, किसी मीटिंग में हिस्सा ले रहा था। मीटिंग शुरु हुए अभी कुछ मिनट ही बीते थे कि स्पीकर अचानक ही रुका और सभी पार्टिसिपेंट्स को गुब्बारे देते हुए बोला, "आप सभी को गुब्बारे पर मार्कर से अपना नाम लिखना है" सभी ने ऐसा ही किया। अब गुब्बारों को दूसरे कमरे में रख दिया गया। स्पीकर ने अब सभी को एक साथ कमरे में जाकर पाँच मिनट के अन्दर अपना नाम वाला गुब्बारा ढूंढ़ने के लिए कहा। सारे पार्टिसिपेंट्स तेज़ी से रूम में घुसे और पागलों की तरह अपने नाम वाला गुब्बारा ढूंढ़ने लगे। पर इस अफरा-तफरी में किसी को भी अपने नाम वाला गुब्बारा नहीं मिल पा रहा था...पाँच मिनट बाद सभी को बाहर बुला लिया गया। स्पीकर बोला,"अरे! क्या हुआ, आप सभी खाली हाथ क्यों हैं? क्या किसी को अपने नाम वाला गुब्बारा नहीं मिला?" "नहीं! हमने बहुत ढूंढा पर हमेशा किसी और के नाम का ही गुब्बारा हाथ आया...", एक पार्टिसिपेंट कुछ मायूस होते हुए बोला। "कोई बात नहीं, आप लोग फिर एक बार कमरे में जाइये, पर इस बार जिसे जो भी गुब्बारा मिले, उसे अपने हाथ में ले और उस व्यक्ति को दे दे जिसका नाम उस पर लिखा हुआ है", स्पीकर ने निर्देश दिया।

एक बार फिर सभी पार्टिसिपेंट्स कमरे में गए, पर इस बार सब शान्त थे, और कमरे में भी किसी तरह की अफरा-तफरी नहीं मची हुई थी। सभी ने एक-दूसरे को उनके नाम के गुब्बारे दिए और तीन मिनट में ही बाहर निकल आये।

स्पीकर ने गम्भीर होते हुए कहा, "बिल्कुल यही चीज़ हमारे जीवन मे भी हो रही है, हर कोई अपने लिए ही जी रहा है, उसे इससे कोई मतलब ही नहीं है कि वह किस तरह औरों की मदद कर सकता है, वह तो सिर्फ पागलों की तरह अपनी खुशियाँ ढूंढ़ रहा है, परन्तु बहुत ढूंढ़ने के बाद भी उसे कुछ नहीं मिलता। हमारी खुशी दूसरों की खुशी में छिपी हुई है। जब हम औरों को उनकी खुशियाँ देना सीख जायेंगे तो अपने आप ही हमें हमारी खुशियाँ मिल जाएंगी, और यही मानव जीवन का उद्देश्य भी है।

प्रभु स्मृति ही आधार...

एक गुरुजी हमेशा ईश्वर के नाम का जाप किया करते थे। वे काफी बुजुर्ग हो गये थे। उनके कुछ शिष्य साथ में ही पास के कमरे में रहते थे।

जब भी गुरुजी को शौच; स्नान आदि के लिए जाना होता था; वे अपने शिष्यों को आवाज़ लगाते थे और शिष्य ले जाते थे। धीरे-धीरे कुछ दिन बाद शिष्य दो तीन बार आवाज़ लगाने के बाद भी कभी आते, कभी और भी देर से आते।

एक बार रात को निवृत्त होने के लिए जैसे ही गुरूजी आवाज़ लगाते हैं, तुरंत एक बालक आता है और बड़े ही कोमल स्पर्श के साथ गुरूजी को निवृत्त करवा कर बिस्तर पर लेटा जाता है। अब ये रोज़ का नियम हो गया।

एक दिन गुरूजी को शक हो जाता है कि, पहले तो शिष्यों को तीन चार बार आवाज़ लगाने पर भी देर से आते थे। लेकिन ये बालक तो आवाज़ लगाते ही दूसरे ही क्षण आ जाता है और बड़े कोमल स्पर्श से सब निवृत्त करवा देता है।

एक दिन गुरूजी उस बालक का हाथ पकड़ लेते हैं और पूछते हैं कि सच बता तू कौन है? मेरे शिष्य तो ऐसे नहीं हैं!

वो बालक के रूप में स्वयं ईश्वर थे; उन्होंने गुरूजी को स्वयं का वास्तविक रूप दिखाया।

गुरूजी रोते हुए कहते हैं : हे प्रभु! आप स्वयं मेरी निवृत्ति के कार्य कर रहे हैं। यदि मुझसे इतने प्रसन्न हो तो मुक्ति ही दे दो ना।

प्रभु कहते हैं कि, जो आप भुगत रहे हैं वो आपका प्रारब्ध है। आप मेरे सच्चे साधक हैं; हर समय मेरा नाम जप करते हैं इसलिए मैं आपका प्रारब्ध भी आपकी सच्ची साधना के कारण स्वयं कटवा रहा हूँ।

गुरूजी कहते हैं कि क्या मेरे प्रारब्ध आपकी कृपा से भी बड़े हैं; क्या आपकी कृपा मेरे प्रारब्ध नहीं काट सकती है।

प्रभु कहते हैं कि, मेरी कृपा सर्वोपरि है; ये अवश्य आपके प्रारब्ध काट सकती है; लेकिन फिर अगले जन्म में आपको ये प्रारब्ध भुगतने फिर से आना होगा। यही कर्म नियम है। इसलिए आपके प्रारब्ध स्वयं अपने हाथो से कटवा कर इस जन्म-मरण से आपको मुक्ति देना चाहता हूँ।

ईश्वर कहते हैं: प्रारब्ध तीन तरह के होते हैं, मन्द, तीव्र तथा तीव्रतम। मन्द प्रारब्ध मेरा नाम जपने से कट जाते हैं। तीव्र प्रारब्ध किसी सच्चे संत का संग करके श्रद्धा और विश्वास से मेरा नाम जपने पर कट जाते हैं। पर तीव्रतम प्रारब्ध भुगतने ही पड़ते हैं। लेकिन जो हर समय श्रद्धा और विश्वास से मुझे जपते हैं; उनके प्रारब्ध मैं स्वयं साथ रहकर कटवाता हूँ और तीव्रता का अहसास नहीं होने देता हूँ।

थोड़ी हवा निकाल दो

एक बार कंपनी में ऑटोमोबाइल इंजीनियर ने एक वर्ल्ड क्लास कार डिज़ाइन की। कंपनी के मालिक ने कार की डिज़ाइन बेहद पसंद की और इंजीनियर की खूब तारीफ की।

जब पहली बार कार की टेस्टिंग होनी थी तो कार को फैक्ट्री से निकालते समय उसे अहसास हुआ कि कार शटर से बाहर निकल ही नहीं सकती थी, क्योंकि कार की ऊँचाई गेट से कुछ इंच ज़्यादा थी। इंजीनियर को निराशा हुई कि उसने इस बात का ख्याल क्यों नहीं किया।

इसके दो उपाय सूझे:

पहला, कार को बाहर निकालते समय गेट की छत से टकराने के कारण जो कुछ बम्प, स्क्रैच आदि आएं, उन्हें बाहर निकालने के बाद रिपेयर किया जाये। पेंटिंग सेक्शन इंजीनियर ने भी सहमति दे दी, हालांकि उसे उम्मीद थी कि कार की खूबसूरती वैसी ही बरकरार रहेगी।

कंपनी के जनरल मैनेजर ने सलाह दी कि गेट का शटर हटाकर गेट के ऊपरी हिस्से को तोड़ दिया जाये। कार निकालने के पश्चात् गेट को रिपेयर करा लेंगे।

यह बात कंपनी का गार्ड सुन रहा था। उसने झिझकते हुए कहा कि अगर आप मुझे मौका दें तो शायद मैं कुछ हल निकाल सकूँ। मालिक ने बेमन से उसे स्वीकृति दी।

गार्ड ने चारो पहियों की हवा निकाल दी, जिससे कार की ऊँचाई 3-4 इंच कम हो गयी और कार बड़े आराम से बाहर निकल गई।

किसी भी समस्या को हमेशा एक्सपर्ट की तरह ही न देखें। एक आदमी की तरह भी समस्या का बढ़िया हल निकल सकता है।

कभी कभी किसी दोस्त के घर का दरवाज़ा हमें छोटा लगने लगता है, क्योंकि हम अपने आपको ऊँचा समझते हैं। अगर हम दिमाग से थोड़ी सी हवा (ईगो) निकाल दें, तो आसानी से हम अंदर जा सकते हैं। ज़िन्दगी सरलता का ही दूसरा नाम है।

दिल्ली। मुख्तार अब्बास नकवी,स्टेट मिनिस्टर,माइनोरिटी अफेयर्स को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सविता। साथ हैं ब्र.कु. फातिमा।

खोरधा-ओडिशा। जिलाधीश नीरंजन साहू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति। साथ हैं ब्र.कु. अनू तथा अन्य।

डिबाई-उ.प्र.। सिविल जज संदीप सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कुसुम।

करनाल-सदर बाज़ार। जिला न्यायविद शशीकान्त शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. आँचल।

डाकपत्थर-उत्तराखण्ड। रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में पुलिस अधीक्षक संदीप नेगी, ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. दीपक तथा अन्य।

नाहन-हि.प्र.। रक्षाबंधन के अवसर पर आदर्श केन्द्रीय कारागार में कैदी भाइयों से बुराइयों को छोड़ने का संकल्प करवाते हुए ब्र.कु. रमा। साथ हैं ब्र.कु. दीपशिखा व अन्य।